

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी में शिक्षण योग्यता का अध्ययन

Akanksha Shukla^{1*}, Dr. Rakesh Kumar Mishra²

¹ Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

² Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

सार - सूचना और संचार के वर्तमान युग में, क्रांति सूचना और संचार प्रौद्योगिकियां हैं जो प्रभावशीलता बढ़ाने और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने के लिए अभूतपूर्व अवसर प्रदान करती हैं। सूचना प्रौद्योगिकी एक नया माध्यम है, संचार का प्रतिनिधित्व करने और सूचना के साथ काम करने का एक नया तरीका है। यह अपने आप में अध्ययन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है और एक उपकरण है जिसे अधिक से अधिक लोगों के दैनिक जीवन में एकीकृत किया जा रहा है। और अध्ययन जिसमें चर्चा की गई है भारत में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को बढ़ाने वाली सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, छात्रों के सीखने और प्रेरणा को बढ़ाने वाली सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का विद्यार्थी, शिक्षक और शिक्षा से संबंध, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी और शिक्षा, सूचना और संचार तकनीक शैक्षिक प्रबंधन को बढ़ाना, उच्च शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी और छात्र, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी और शिक्षक

खोजशब्द - प्रौद्योगिकी, सूचना, शिक्षा

-----X-----

परिचय

हम सूचना और प्रौद्योगिकी के युग में जी रहे हैं। वैश्वीकरण के युग में प्रौद्योगिकियों का विस्फोट दुनिया को एक से अधिक तरीकों से प्रभावित कर रहा है। जीवन के सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर का व्यापक उपयोग देखा गया है। विशेष रूप से पिछले दो दशकों में उभरती प्रौद्योगिकियों में कई प्रमुख रुझान रहे हैं जिन्होंने माइक्रोचिप प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ निर्देशात्मक मीडिया तक पहुंच बढ़ा दी है; कंप्यूटर अब डेस्क पर उचित मूल्य पर आसानी से उपलब्ध हैं। इंटरनेट व्यक्तिगत संचार के माध्यम के रूप में कार्य करता है; सूचना प्रदाताओं के साथसाथ उपभोक्ताओं को भी। यह - शिक्षा के लिए एक अद्वितीय संसाधन है। संचार और कंप्यूटर प्रौद्योगिकियों ने सभी विकासों के केंद्र चरण पर कब्जा कर लिया है और समाज पर गहरा प्रभाव डाल रहे हैं, उदा। बैंकों में कम्प्यूटरीकृत लेखांकन, संपत्ति कर का ऑनलाइन भुगतान आदि।[1]

इसने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर भी काफी प्रभाव डाला है। नई प्रकार की शैक्षिक प्रौद्योगिकियां जैसे ई-लर्निंग सीडी,

डीवीडी लेक्चर, वर्चुअल क्लास आदि सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों में नवाचारों के समानांतर एक तेज गति से उभर रही हैं। कक्षा में नई शैक्षिक तकनीक का कार्यान्वयन शिक्षक-केंद्रित से छात्र-केंद्रित पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है। ज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विस्फोट ने सीखने के माहौल की विशेषताओं को लगभग बदल दिया है, नए सीखने के माहौल और उभरती हुई नई सीखने की तकनीकों का मार्ग प्रशस्त किया है। इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में कंप्यूटर और कंप्यूटर सहायता प्राप्त प्रौद्योगिकी या सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए समाज की अत्यधिक आवश्यकता है। शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग को अधिक ज्ञान आधारित कार्यबल तैयार करने के तरीके के रूप में देखा जाता है।

भारत में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी भारत में बीसवीं सदी के हालिया विकासों में से एक है। इसने दुनिया भर में हर

प्रणाली को घर से संबंधित प्रणालियों से औद्योगिक प्रणालियों में बदल दिया है। गौरतलब है कि इसने अपने सभी रूपों में शैक्षिक प्रणालियों को प्रभावित किया है। शैक्षिक क्षेत्र में शिक्षा प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार के सूचना और संचार माध्यमों का उपयोग किया जाता है। रेडियो, टीवी, टेप रिकॉर्डर, ओएचपी, एलसीडी प्रोजेक्टर, कंप्यूटर और अब इन प्रौद्योगिकियों में प्रगति के साथ परिदृश्य बदल गया है। इंटरनेट और उन्नत कंप्यूटर अब शिक्षा में निर्देश के साधन के रूप में उपयोग किए जा रहे हैं। इस डिजिटलीकरण ने शिक्षणअधिगम प्रक्रिया को - डिजाइन, विकसित, वितरित, प्रबंधन और मूल्यांकन करना संभव बना दिया है। यह प्रणाली की दक्षता को बढ़ाता है और इसे और अधिक शक्तिशाली बनाता है।[2]

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को प्रभावी ढंग से और उचित रूप से उपयोग करने की क्षमता को अब शिक्षार्थियों को मानव गतिविधि के हर क्षेत्र में जानकारी प्राप्त करने और उसका फायदा उठाने की अनुमति देने के लिए आवश्यक माना जाता है। यह माना जा सकता है कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के विशिष्ट रूप समय के साथ बदलेंगे। हालांकि, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को उद्देश्यपूर्ण रूप से जागरूक और उपयोग करने में सक्षम होने की आवश्यकता सूचना समाज में पूर्ण भागीदारी की कुंजी रहेगी।

शिक्षक सूचना का प्रवेश द्वार है, शिक्षक एक संरक्षक, प्रशिक्षक, निर्देशक और मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है ताकि छात्रों को समझने और उन्हें समझने में मदद मिल सके। उसके लिए शिक्षक को अपनी ओर से सर्वश्रेष्ठ करना चाहिए, उसके लिए शिक्षक विभिन्न विधियों, दृष्टिकोणों और तकनीकों का उपयोग करता है। लेकिन आज की सूचना प्रौद्योगिकी की दुनिया में ये पर्याप्त नहीं हैं। इसलिए उन्हें अपने शिक्षण में 8 सूचना और संचार प्रौद्योगिकी संसाधनों का उपयोग करने की आवश्यकता है, जिस पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2000) और कई समितियों द्वारा जोर दिया गया है क्योंकि छात्रों का भविष्य माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा में उनके प्रदर्शन पर निर्भर करता है क्योंकि इसे आधार माना जाता है व्यावसायिक पाठ्यक्रम और उच्च शिक्षा। इसलिए शिक्षक का कर्तव्य है कि वह छात्रों की शंकाओं को दूर करे और उन्हें समझाए। यह सूचना और संचार प्रौद्योगिकी जागरूकता और शिक्षकों द्वारा सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग से संभव या बढ़ाया जा सकता है। अतः अन्वेषक ने माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सूचना और संचार प्रौद्योगिकी

जागरूकता, उपयोग और आवश्यकता को जानने के लिए एक अध्ययन करने का प्रयास किया है।[3]

शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को बढ़ाने वाली सूचना और संचार प्रौद्योगिकी

कई वर्षों से पाठ्यक्रम पाठ्यपुस्तकों के इर्द-गिर्द लिखा जाता रहा है। शिक्षकों ने सामग्री को समेकित और पूर्वाभ्यास करने के लिए डिजाइन किए गए ट्यूटोरियल और सीखने की गतिविधियों के साथ व्याख्यान और प्रस्तुतियों के माध्यम से पढ़ाया है। समसामयिक सेटिंग्स अब ऐसे पाठ्यक्रम का पक्ष ले रही हैं जो योग्यता और प्रदर्शन को बढ़ावा देते हैं। पाठ्यचर्या क्षमताओं पर जोर देना शुरू कर रही है और इस बात से अधिक चिंतित है कि जानकारी का उपयोग कैसे किया जाएगा, इसके बारे में जानकारी क्या है। समकालीन सूचना और संचार प्रौद्योगिकी इन सभी आवश्यकताओं के लिए मजबूत समर्थन प्रदान करने में सक्षम हैं और अब योग्यता और प्रदर्शन-आधारित पाठ्यक्रम के लिए विश्व स्तरीय सेटिंग्स के कई उत्कृष्ट उदाहरण हैं जो इन प्रौद्योगिकियों के खर्च का अच्छा उपयोग करते हैं।

छात्रों के सीखने और प्रेरणा को बढ़ाने वाली सूचना और संचार प्रौद्योगिकी

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी छात्रों के लिए एक पूरी तरह से नया सीखने का माहौल प्रस्तुत करती है, इस प्रकार सफल होने के लिए एक अलग कौशल सेट की आवश्यकता होती है। महत्वपूर्ण सोच, अनुसंधान और मूल्यांकन कौशल महत्व में बढ़ रहे हैं क्योंकि छात्रों के पास विभिन्न स्रोतों से जानकारी की मात्रा बढ़ रही है। पाठ्यचर्या गतिविधि के अवसरों को अधिकतम करने के लिए यह आवश्यक है कि कंप्यूटर को कक्षा में रखा जाए। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी पर्यावरण छात्रों और शिक्षकों के अनुभव को बेहतर बनाता है और बेहतर परिणामों के लिए सीखने के समय का गहन उपयोग करता है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी पर्यावरण को विभिन्न सॉफ्टवेयर का उपयोग करके विकसित किया गया है और वेब आधारित और मल्टीमीडिया सामग्री विकसित करने में विस्तारित अनुभव भी। शिक्षा प्रणालियों और सीखने के तरीकों को बदलने और आधुनिक बनाने में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकियां शिक्षा की गुणवत्ता को कई तरीकों से बढ़ा सकती हैं, शिक्षार्थियों की प्रेरणा और जुड़ाव को बढ़ाकर, बुनियादी कौशल के अधिग्रहण को सुविधाजनक

बनाकर और शिक्षक प्रशिक्षण को बढ़ाकर। सूचना और संचार प्रौद्योगिकियां भी परिवर्तनकारी उपकरण हैं, जिनका उचित उपयोग होने पर, एक शिक्षार्थी केंद्रित वातावरण में बदलाव को बढ़ावा दे सकता है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से कंप्यूटर और इंटरनेट प्रौद्योगिकियां, शिक्षकों और छात्रों को वह करने की अनुमति देने के बजाय शिक्षण और सीखने के नए तरीकों को सक्षम करती हैं जो उन्होंने पहले किया है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का न केवल इस बात पर प्रभाव पड़ता है कि छात्रों को क्या सीखना चाहिए, बल्कि यह इस बात पर भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि छात्रों को कैसे सीखना चाहिए। पाठ्यचर्या को विषय-केंद्रित से सक्षमता-आधारित में स्थानांतरित करने के साथ-साथ, पाठ्यचर्या वितरण का तरीका अब शिक्षक केंद्रित वितरण के रूपों से छात्र-केंद्रित वितरण के रूपों में स्थानांतरित हो गया है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी सीखने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। [4]

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का विद्यार्थी, शिक्षक और शिक्षा से संबंध

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की आवश्यकता और महत्व एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति और अनुशासन से अनुशासन में भिन्न होता है। शैक्षिक सेटअप में भी विभिन्न हितधारक विभिन्न सूचना और संचार प्रौद्योगिकी आवश्यकताओं के साथ भिन्न होते हैं। शिक्षकों की जरूरत छात्रों की जरूरत से अलग है। यह प्रशासकों और शैक्षिक योजनाकारों की आवश्यकता से भी भिन्न है। यहां शिक्षा, शिक्षक और छात्र के साथ सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के कुछ संबंध छात्र, शिक्षक और शिक्षा के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की आवश्यकता को समझने के लिए दिए गए हैं।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी और शिक्षा

इस सूचना समाज में, ज्ञान देश के सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक संसाधनों में से एक बन रहा है, जबकि सीखना व्यक्ति के लिए, व्यवसाय और उद्योग के लिए और बड़े पैमाने पर समाज के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया बन रहा है। तीव्र तकनीकी विकास का अर्थ है कि ज्ञान अब व्यक्ति के लिए 'जीवनकाल में एक बार' अनुभव नहीं रह गया है। यह बल्कि एक संपत्ति है, जिसे लगातार अद्यतन करना पड़ता है। इसलिए, पूर्व में अर्जित योग्यताओं को बनाए रखने और विकसित करने की दृष्टि से युवा लोगों के साथ-साथ वयस्कों के लिए भी आवर्ती शिक्षा ने अधिक महत्व प्राप्त किया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी शैक्षिक उत्कृष्टता

के धुवों के निर्माण का लाभ उठा सकती है जहां सूचना और संचार प्रौद्योगिकी उन्नत ज्ञान तक पहुंच प्रदान करती है, शैक्षिक अनुसंधान क्षमता विकसित करने में मदद करती है, शिक्षकों को विकसित करने और सशक्त बनाने में मदद करती है और इस प्रकार उनके अलगाव को तोड़ती है, स्कूल-समुदाय संबंध में सुधार करती है, मदद करती है नई शैक्षिक विधियों, तकनीकों और नई सामग्री को पेश करने में। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी एक व्यापक प्रणाली के आधार पर शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रोत्साहन प्रदान करेगी। साथ ही शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के मूल्य का बड़ा हिस्सा शिक्षाशास्त्र और प्रबंधन को बढ़ाने की उनकी क्षमता में निहित है। [5]

सूचना और संचार तकनीक शैक्षिक प्रबंधन को बढ़ाना

कंप्यूटर सॉफ्टवेयर प्रोग्राम का उपयोग टाइम टेबलिंग और स्कूल प्रबंधन में स्टाफ के समय, छात्र समय और स्थान के उपयोग में सुधार के लिए किया जा रहा है, इस प्रकार लागत में काफी कमी आई है। यह ध्यान दिया जाता है कि स्कूलों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी कम लागत के साथ गुणवत्ता में सुधार कर सकती है। विकासशील देशों में स्कूल न जाने वाले बच्चों और युवाओं के लिए शिक्षा के प्रावधान के लिए पुरानी सूचना और संचार तकनीक अभी भी लागत प्रभावी हैं। नई सूचना और संचार प्रौद्योगिकी में शिक्षक शिक्षा के लिए बड़ी मात्रा में और बेहतर गुणवत्ता की बहुत बड़ी क्षमता है। कवरेज और पहुंच को व्यापक बनाने के लिए पुरानी सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का एक संयोजन और अंतःक्रियाशीलता प्रदान करने के लिए नई सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को शिक्षक शिक्षा के लिए लागत प्रभावी माना जाता है। यदि ऑनलाइन दूरस्थ शिक्षा तक पहुँचने के लिए ब्रॉडबैंड एक्सेस और प्रशिक्षित कर्मचारियों के साथ कंप्यूटर प्रयोगशालाओं से लैस सामुदायिक शिक्षण केंद्रों का एक राष्ट्रव्यापी नेटवर्क विकासशील देशों में तब तक स्थापित किया जा सकता है जब तक कि घर पर कंप्यूटर उपलब्ध न हो, इन देशों के लिए संभावनाएं हैं। [6]

उच्च शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका

उच्च स्तर पर शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका आवर्ती और अपरिहार्य है। विश्वविद्यालयों के साथ सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को उनकी रणनीतियों और शैक्षिक प्रक्रिया में एकीकृत करना एक चुनौती है। इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लागू किया जाना चाहिए। यह योग्यता और लचीलेपन में सुधार करने में मददगार

होगा, ट्यूशन के क्षेत्र में व्यापक पहुंच; सीखने की उपलब्धि में सुधार; महिला साक्षरता पर पर्याप्त जोर देते हुए वयस्क निरक्षरता दर में कमी; युवाओं और वयस्कों के लिए आवश्यक अन्य आवश्यक कौशल में बुनियादी शिक्षा और प्रशिक्षण के प्रावधानों का विस्तार; व्यक्तियों और परिवारों द्वारा ज्ञान, कौशल के अधिग्रहण में वृद्धि। यह विभिन्न प्रकार की शैक्षिक सेवाओं और माध्यमों को बढ़ाएगा और शिक्षा और सूचना प्राप्त करने के समान अवसरों को बढ़ावा देगा। यह प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देकर शैक्षिक जानकारी एकत्र करने और प्रसारित करने की प्रणाली विकसित करने में सहायक होगा।[7]

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी और छात्र

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि सीखने की प्रक्रिया हमेशा एक व्यक्ति के संज्ञान में होती है और उसके मनोदैहिक और भावात्मक विकास को प्रभावित करती है। इसलिए शिक्षा झुकाव की एक बहुत ही व्यक्तिगत प्रक्रिया है। शिक्षार्थी अपनी उपलब्धियों को अर्जित कौशल और कार्यात्मकता के माध्यम से व्यक्त करता है, जो कि समाज द्वारा उपयोग की जाने वाली उम्र या उपकरणों और तकनीकों की प्रौद्योगिकियों पर बहुत अधिक निर्भर हैं। इसलिए झुकाव की बुनियादी और मौलिक प्रक्रिया बहुत ही व्यक्तिगत है और शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकियों और तरीकों से स्वतंत्र है। हालांकि, इसे अन्य व्यक्तियों या शिक्षण सामग्री के साथ अंतःक्रियात्मकता की आवश्यकता होती है, जो संचार युग की प्रौद्योगिकियों पर निर्भर हैं। समग्र दृष्टिकोण से शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य मनुष्य को कामकाजी जीवन और सामान्य रूप से जीवन के लिए योग्य बनाना है। इस प्रकार, केवल शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य युवाओं और वयस्कों को उस ज्ञान को प्राप्त करने और पुनर्पेश करने के लिए योग्य बनाना नहीं है, जो उनके शिक्षक द्वारा प्रसारित किया जाता है। सूचना समाज के संबंध में महत्वपूर्ण नया कारक यह है कि युवा लोगों और वयस्कों को बड़ी मात्रा में सूचनाओं को छाँटने, चुनने, संसाधित करने और उपयोग करने के लिए रचनात्मक रूप से योग्य होना चाहिए, जो सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तक पहुंच प्रदान करते हैं। [9-8]

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी और शिक्षक

जीवित रहने के लिए प्रशिक्षकों को परिवर्तन के अनुकूल होना चाहिए। जैसे-जैसे नई प्रक्रियाएं और तकनीक उभरती हैं, उन्हें उनके साथ रहना चाहिए। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग से, नवीनतम शोध पर आधारित नया ज्ञान कुछ ही सेकंड में दुनिया भर में भेजा जा सकता है।

शिक्षक, जो ज्ञान का वितरण करते हैं, अपने आसपास हो रही सूचनाओं के तेज उतार-चढ़ाव के साथ तालमेल नहीं बिठा पाते हैं। ज्ञान की स्थिर समझ होना संभव नहीं है; बल्कि, यह संभव है कि शिक्षकों को उनकी वर्तमान और भविष्य की भूमिकाओं के बारे में चेतावनी दी जा रही है क्योंकि उनके लिए उपलब्ध जानकारी की मात्रा दुनिया भर में एक घातीय दर से बढ़ती है। शिक्षक की भूमिका में एक मौलिक बदलाव की आवश्यकता है, क्योंकि प्रशिक्षकों के लिए अब केवल विषय ज्ञान का संचार करना पर्याप्त नहीं है, दूसरी ओर, शिक्षकों को पर्याप्त रूप से तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण सोच, सूचना साक्षरता और सहकारी कार्यशैली को बढ़ावा देना चाहिए।[10]

निष्कर्ष

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रति शिक्षक प्रशिक्षकों की योग्यता अनुकूल पाई गई है। यह पाया गया है कि शिक्षक प्रशिक्षकों के पास अच्छा कंप्यूटर कौशल है लेकिन शिक्षण संस्थानों में कंप्यूटर शिक्षा को लागू करने और एकीकृत करने की सुविधा नाममात्र की है। सीमित अर्थों में केवल शिक्षक-प्रशिक्षक ही अपने दैनिक शैक्षणिक अपडेट में इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं सामाजिक और व्यावसायिक परिवर्तनों के कारण होने वाली प्रौद्योगिकियों में तेजी से परिवर्तन इस बात का संकेत दे रहे हैं कि भविष्य में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका शिक्षा में वृद्धि पर होगी। शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को शामिल करने से सीखने के अवसरों तक पहुंच बढ़ सकती है। यह उन्नत शिक्षण विधियों के साथ शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने, सीखने के परिणामों में सुधार करने और शिक्षा प्रणालियों के सुधार या बेहतर प्रबंधन को सक्षम करने में मदद करेगा। हालांकि, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी एक शिक्षण सहायता के रूप में जटिल है क्योंकि यह शिक्षकों से अधिक विशिष्ट कौशल की मांग करती है। इसके अलावा, शिक्षक को कुछ चुनौतियों और बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है जो उन्हें शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की सफल तैनाती से रोक सकते हैं।

संदर्भ

1. अदानू, टी.एस. (2007)। घाना में राज्य के स्वामित्व वाले विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में सतत व्यावसायिक विकास (सीपीडी)। पुस्तकालय प्रबंधन, 28 (6/7), 292-305

2. एडेमोडी, डी.टी., और एडेपोजू, ई.ओ. (2009)। ऑडो और एकिटी स्टेट्स, नाइजीरिया (जून) (ऑनलाइन) में शैक्षणिक पुस्तकालयों में लाइब्रेरियन के बीच कंप्यूटर कौशल।
3. एडेयोइन, एस.ओ. (2006)। पश्चिम अफ्रीकी विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के कर्मचारियों के बीच आईसीटी साक्षरता। एंग्लोफोन और फ्रैंकोफोन देशों का तुलनात्मक अध्ययन। इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी, 24 (5), 694-705।
4. थिल्डरिम, एस।, 2007। तुर्की बुनियादी शिक्षा स्कूलों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का वर्तमान उपयोगशिक्षकों की सूचना और संचार प्रौद्योगिकी : की समीक्षा और एकीकरण के लिए बाधाएं, इंस्ट्रक्शनल मीडिया के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, वॉल्यूम। 34, पीपी.171-186।
5. चेल्लादुरै, डी., और पिचममाल, एस) .2016)। उच्च शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी। इन मॉडर्न पर्सपेक्टिव्स एंड स्ट्रेटेजीज इन टीचिंग लर्निंग एंड इवैल्यूएशन .पीपी)80-81)। तमिलनाडु : हिंडको
6. बार्डन, पी. (1997)। भविष्य के लिए पुस्तकालय और सूचना कर्मियों के लिए प्रशिक्षण और विकास: एक घोषणापत्र। लाइब्रेरियन करियर डेवलपमेंट, 5(1), 30-33.
7. बरुचसन-अर्बिब, एस., और ब्रॉस्टीन, जे. (2004)। पुस्तकालय और सूचना पेशे के भविष्य के लिए एक दृश्य: एक डेल्फि अध्ययन। सूचना विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए अमेरिकन सोसायटी का जर्नल, 53, 397-408।
8. बावडेन, डी., वेलार, पी., और ज़बुकोवेक, वी. (2005)। डिजिटल पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण: एक स्लोवेनिया/यूके तुलना। एस्लिब प्रोसीडिंग्स: न्यू इंफॉर्मेशन पर्सपेक्टिव्स, 57 (1), 85 -98।
9. बिडिस्कोम्बे, आर। (2001)। इंटरनेट और आईटी कौशल के लिए सूचना पेशेवरों की जरूरतों का विकास: बर्मिंघम विश्वविद्यालय में अनुभव। कार्यक्रम, 35 (2), 157 - 166।
10. बीआई, एच.के., और वान्यामा, पी. (2001)। स्वचालन और मार्गरेट थैचर लाइब्रेरी, विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के बीच नौकरी की संतुष्टि पर इसका प्रभाव। पुस्तकालय प्रबंधन, 22 (6/7), 303-310।

Corresponding Author

Akanksha Shukla*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.